GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

जॉन डीवी का शैक्षिक निहतार्थ

Dr. Shaista Bhutto
Email:shaistahasan3698@gmail.com,7742861219

सारांश

जॉन डीवी अमेरिकी दार्शनिक व शिक्षा शास्त्री थे! जॉन डीवी ने व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया उन्होंने केवल सैद्धांतिक शिक्षा को और स्वाभाविक तथा बेकार माना उन्होंने शिक्षा को मानव जीवन के लिए आवश्यक माना शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया बताया उन्होंने ऐसी शिक्षा की महता पर प्रकाश डाला जो बालक को व्यवहारिक बनाएं वह जो अपने जीवन की समस्याओं को अपने बल पर सुलझा सके वह अपनी शिक्षा के बल पर समाज में अपने योगदान दे सकें

मुख्य शब्दावली: जॉन डीवी, प्रयोजनवादी, व्यवहारवादी, प्रयोगशाला स्कूल, शिक्षा शास्त्र, दार्शनिक, व्यवहारिक जीवन

प्रस्तावना: जॉन डीवी अमेरिकी दार्शनिक शिक्षा शास्त्री थे जिनका अमेरिका व दुनिया भर में शिक्षा के विकास पर काफी प्रभाव पड़ा वे pragmatism के अनुगामी में से एक थे उन्होंने शिक्षा में दो चीजों पर बहुत ज्यादा जोर दिया 1. प्रैक्टिकल एक्सपीरियंस 2. साइंटिफिक इंक्वारी पर

डीवी का मानना था कि किसी फिक्स करिकुलम पर आधारित शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए वह बालक की रुचि वह जरूरत के आधार पर तय होना चाहिए उनका मानना था कि शिक्षा लोकतांत्रिक व इंक्लूसिव होनी चाहिए विद्यालय समाज को सपोर्ट करने वाला होना चाहिए यदि बालक विद्यालय से समझदार होकर निकलता है तो वह आगे जाकर समाज में अपना योगदान देगा जॉन डीवी के शिक्षा पर चार विचार थे 1 experimental learning 2.progressive education 3.Integrated curriculum 4.teacher as facilitator

डीवी के अनुसार शिक्षा व्यावहारिक अनुभव पर आधारित होनी चाहिए जिससे वह वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके शिक्षा की परिपूर्णता चार चरणों में पूर्ण होती है 1 experiencing 2 reflecting 3 generalizing 4 applying

विद्यालय का करिकुलम इस तरह से डिजाइन होना चाहिए जिससे भावि नागरिक समाज के लिए सकारात्मक भागीदारी का हिस्सा बन सके डीवी के अनुसार शिक्षक को फेसिलेटर की तरह होना चाहिए जो बालको को

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

सहायक के रूप में हो अपनी सोच को बालको पर थोपा नहीं जाना चाहिए शिक्षकों को भ्रमण प्रयोजन व क्रियात्मक कार्यों के अनुसार शिक्षण करवाना चाहिए

जीवन परिचय: जॉन डीवी का जन्म वरमांट के वेलिंगटन शहर में अक्टूबर 1859 में हुआ था स्नातक की परीक्षा में उन्होंने दर्शन में विशेष योग्यता दिखाइ विभिन्न विश्वविद्यालय में वह दर्शन के शिक्षक रहे शिकागो में पढ़ने के काल में उनका ध्यान शिक्षा की ओर गया इसलिए उन्होंने एक प्रयोगशाला स्कूल सन 1896 में खोल दिया इस स्कूल को खोलने का प्रयोजन यह था कि वह दर्शन मनोविज्ञान तथा शिक्षा के विषयों को प्रयोगशाला में ठीक ऐसा ही संबंध स्थापित कर दें जैसा की विज्ञान की विभिन्न शाखों को प्रयोगशाला से होता है बीवी को हम व्यवहारवादी मानते हैं यदि भी उनके दर्शन पर ही हीगल तथा जेम्स दोनों का प्रभाव स्पष्ट अभिव्यक्त होता है सन 1952 में 93 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया

डीवी के शिक्षा संबंधी विचार: डिवी के अनुसार व्यापक रूप में शिक्षा जीवन के व्यावहारिक रूप की अविरलता है डीवी ने शिक्षा को पूर्ण रूपेण सामाजिक प्रक्रिया बताया है इसके प्रमुख दो आधार है व्यक्तिगत और सामाजिक व्यक्ति की शक्तियों रुचियां योग्यता आदि को भी ध्यान में रखकर उसके अनुकूल उसे शिक्षा देनी चाहिए परंतु साथ ही साथ उसकी समस्त शक्तियां रुचि आदि को भी सामाजिक मूल्य देना चाहिए बालक की शक्तियां रुचियां का वास्तविक मूल्य वही है जो समाज उसे देता है सामाजिक वातावरण में ही उसका विकास होता है और उसे अक्षुण्ण बनाने में उसकी सहायता विद्यालय करता है डीवी ने कहा है कि शिक्षा व्यक्ति की कुशलता बढ़ाने के साथ-साथ उसे अनुभव को भी आगे बढ़ती है जिससे उसके सामाजिक मूल्य बढ़ाते हैं इस प्रकार जॉन डीवी ने शिक्षा के व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया है केवल सैद्धांति शिक्षा को डीवी ने बेकार बताया है

शिक्षा के उद्देश्य :० शिक्षा को बालक का इस प्रकार से विकास करना चाहिए ताकि वह वातावरण के साथ समायोजन कर सके बालक समाज का एक अंग है अतः वह यह आवश्यक है कि शिक्षा बालक को समाज के अनुरूप ही तैयार करें तथा उसकी समाज के प्रति कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व को निभाने का तरीका बताएं तभी बालक अपने को समझ में सामाजिक कर सकता है स्वीकारात्मक नैतिकता का विकास भी बालक के विकास में सहायक है जिसको शिक्षा के द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है इसमें बालक की सामाजिक कुशलता में वृद्धि होती है

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

उपसंहार :इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र मडीवी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है उनके जो अमूल्य विचार है उसने शिक्षा जगत में एक नई क्रांति लाई है जहां पारंपरिक शिक्षा को ही स्थान दिया जाता था वहां प्रयोगशाला के माध्यम से जॉन डीवी ने समाज को महत्वपूर्ण बताते हुए समाज में बालक के योगदान की बात भी कहीं जो यकीनन आधुनिक शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान रखता है

संदर्भ:

शर्मा राजकुमारी, उदयमान भारतीय समाज में शिक्षक, राधा प्रकाशन

शर्मा, गणपति राय,भारतीय समाज और शिक्षा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर